ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्...
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 जुलाई 2017
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११८
युगाब्द-५११८, अंक-८७, वर्ष-१०
श्रावण मास, विक्रमी २०७४ (जुलाई 2017)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ –ऋ० १। १। ६। ४

व्याख्यान–हे वाक्पते! सर्वविद्यामय! [(नः)] हमको आप की कृपा से (सरस्वती) सर्वशास्त्र–विज्ञानयुक्त वाणी प्राप्त हो। (वाजेभिः) तथा उत्कृष्ट अन्नादि के साथ वर्त्तमान (वाजिनीवती) सर्वोत्तम क्रिया–विज्ञानयुक्त, (पावका) पवित्रस्वरूप और पवित्र करनेवाली, सदैव सत्यभाषणमय मङ्गलकारक वाणी आपकी प्रेरणा से प्राप्त होके आपके अनुग्रह से (धियावसुः) परमोत्तम बुद्धि के साथ वर्त्तमान निधिस्वरूप यह वाणी (यज्ञं वष्टु) सर्वशास्त्रबोध और पूजनीयतम आप के विज्ञान की कामनायुक्त सदैव हो। जिस से हमारी सब मूर्खता नष्ट हो, और हम महापाण्डित्ययुक्त हों।।

सम्पादकीय

गौरक्षा/आतंक?

दुर्भाग्य से जब देश के दुर्दिन आये तब हमारे जीवनमूल्य हमारी श्रेष्ठ परम्पराएं, हमारी कल्याणकारी मान्यताएं आदि सभी छिन्न–भिन्न होने लगी, तार–तार कर दी जाने लगी। इन्हीं परम्पराओं, मान्यताओं में एक मान्य परम्परा शाकाहार की थी जिसके फलस्वरूप प्राणिमात्र हमारे राष्ट्र में सुखी रहते थे। जिसमें एक वैकल्पिक नियम यह भी था कि – हिंसक क्रूर पशुओं की संख्या अत्याधिक होकर कहीं अहिंसक पशुओं एवं मानवों पर विपत्ति बनकर न टूटे, अतः राजा का कर्तव्य था कि हिंसक क्रूर पशुओं पर नियन्त्रण बनाये रखे और आवश्यकता पड़ने पर ऐसे हिंसक पशुओं का वध कर बहुसंख्यक अहिंसक प्राणियों की सुरक्षा का प्रबन्ध सुनिश्चित करे। किन्तु कालक्रम से यह हिंसक पशुओं पर नियन्त्रणरूपी आवश्यक परम्परा महाभारत के पश्चात् कब शिकार खेलने में (मृगया) और शिकार खेलने से कब मांसाहार में बदल गयी, इसका काल नियत करना अत्यन्त कठिन है। लेकिन यह ऐसी विकृत होती गयी कि अरण्यवासी प्राणियों के दुर्दिन प्रारम्भ हो गये, जब वन पशुओं के मांसादि स्वाद से क्रूर मानव की पूर्ति असहज हुई, तब अपने स्वयं के आश्रित निरीह पशुओं की ओर उसकी दृष्टि गयी, ऐसे ही मांसाहार की ओर उन्मुख होने के काल में हमारा यह गौरवशाली राष्ट्र गुलामी की ओर, पराधीनता की ओर बढ़ गया।

अब हमारे सामने थे अनार्य–अनाड़ी, वहशी, अनपढ़–अनगढ़, जंगली–असभ्य मानव शरीरधारी क्रूरकर्मा म्लेच्छ, जिन्हें खान–पान की, वेश–भूषा की, रहन–सहन की कोई सभ्यता ही नहीं थी। कोई भी भिन्न जाति का मनुष्य उनका शत्रु था, महिलाएं उनके लिए खेती थी और सम्मुख पड़ने वाला प्रत्येक पशु (सुअर को छोड़कर) उनके लिए आहार था। दया, करूणा, उदारता, प्रेम–स्नेह जैसे गुणों को तो इन बर्बर लोगों ने अपनों के लिए, अपनों के भीतर भी कभी नहीं देखा था। उन्होंने तो अपने जन्मकाल से ही क्रूरता पूर्वक एक कबीले को दूसरे कबीले का नरसंहार करते हुए, उनकी महिलाओं की हृदयविदारक चीखों के बीच बलात्कार करते हुए, छोटे–छोटे अबोध बालक–बालिकाओं को तलवारों और भालों की नोकों पर उछालकर आर–पार होते हुए देखा था। पशुमात्र को उन्होंने देखा था घेर–घेरकर मारे जाते हुए, चीरते–फाड़ते हुए, कच्चा खाते हुए और आग मिल जाये तो पकाकर खाते हुए, फिर चाहे वे गाय हो, बैल हो, ऊँट हो या भैंस। उन्हें इससे कोई लेना–देना न था। तभी हमारे इस सभ्य–सदाचारी मर्यादित देश में गोहत्या प्रारम्भ हुई, पराजित–अपमानित, विभाजित हमारे लोग स्वयं अपने आपकी रक्षा नहीं कर पा रहे थे, तब वे निरीह गौ आदि प्राणियों की क्या रक्षा करते? पुनरपि यदा–कदा उनका खून खोलता और एक–दो लोग गौहत्या करते हुए, गौहत्या का प्रयास करते हुए देखे जाते तो गौरक्षक यथावसर, यथा सम्भव गौरक्षा करते थे, और ऐसा कुछ वीर पुरुष अपने

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

प्राणों का भी मोह छोड़कर करते थे। फलस्वरूप म्लेच्छ शासक अपनी दीर्घावधि की भोगमयी योजनाओं पर पानी न फिरे इसलिए प्रत्यक्ष में गौहत्यादि पर प्रतिबन्ध आदि का दिखावा कर दिया करते तथा स्वयं ऐसे ही निरीह प्राणियों के मांसादि से अपनी दावतें उड़ाते रहते।

समय बीता और हमारे देस पर अंग्रेजों का शासन आ गया, साथ ही आ गयी बाजारवादी भयानक क्रूर मशीनी उद्योग व्यवस्था, जिसमें प्रत्येक वस्तु का एक मूल्य था, हर चीज बिकाऊ थी, अंग्रेज उसे खरीदता था चाहे जैसे भी हो, और अपने तरह से उसका व्यापार करता था। हमारे देश में विशाल जंगलों में असंख्य पशु थे तो अंग्रेज शिकारी थे, नाना प्रकार के वृक्ष थे तो अंग्रेज जंगलों की कटाई के ठेकेदार थे, और जो इतना परिश्रम नहीं कर पाते थे वे खरीद लेते थे–हमारी गाय, बैल, भैंस, ऊँट, भेड़–बकरी, कुत्ता–बिल्ली, बन्दर–खरगोश आदि और उन्हें क्रूरतापूर्वक पहले हाथों से चलने वाली मशीनों से और पश्चात् बिजली आदि से चलने वाली मशीनों से अनगिनत काटते–पीटते, नाना प्रकार की उपभोक्ता सामग्री बनाकर बेच डालते। कुछ हम ही को तो कुछ विश्व के अनेक देशों को। अंग्रेज गये तो कत्लखाने हमारे ही लोगों ने खरीद लिए, कत्लेआम चलता रहा, लेकिन साधारण मनुष्य जैसे–तैसे अपने ही खोल में बन्द अपने ही अधिकारों के लिए जूझता रहा, और काल व्यतीत होते–होते आजादी के बाद भी सत्तर साल बीत गये। इन सत्तर वर्षों में कुछ तपस्वी महात्माओं ने अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं को बचाने, बढ़ाने के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया, उन श्रेष्ठ परम्पराओं में 'एक गौरक्षा' के लिए ही न जाने कितने लोगों ने इन सत्तर वर्षों में भी अपने प्राण दे दिये, श्रीमती इन्दिरा गाँधी के शासन काल में ही १९६६ ई. ७ नबम्वर को असंख्य साधू–संत, गृहस्थ, 'गौरक्षा आन्दोलन' में गोपाष्टमी के पर्व पर काल कलवित कर दिये गये, उनके शव भी मिल नहीं पाये कि कम से कम विधि–विधान से उनका अन्तिम संस्कार हो पाता। फलस्वरूप लोगों में यह भावना बैठ गयी, घर कर गई कि अब देश में गौरक्षा नहीं हो सकती, असम्भव है। लेकिन जिन ऋषि–मुनियों का रक्त हमारी धमनियों में है, वे अहिंसक थे, योगशास्त्र में योग–भक्ति–प्रभुप्राप्ति के मार्ग पर चलने की पहली सीढ़ी ही यम है और यम का सर्वप्रथम आधार ही अहिंसा है तो हम कब तक हिंसा का नंगा नाच देख सकते हैं? प्राणियों का तड़पना रम्भाना, चीखना, चिल्लाना कब तक सुन सकते हैं? अधिक समय तक सम्भव ही नहीं है और ठीक ऐसी परिस्थितियों का लाभ लेने के लिए वर्तमान राजनैतिक सत्ता ने युवाओं का पोषण किया, पीठ थपथपाई गाय के महत्व को अतिश्योक्ति पूर्ण चमत्कारी शब्दों से अलंकारिक प्रयोगों के साथ व्याख्यायित किया, जिससे सैकड़ों–हजारों गौरक्षादल देश में फैल गये, इन गौरक्षकों को समझाया गया कि हमारी सरकार ही इस समस्या का समाधान है, बस फिर क्या था सभी ने वोट बनाये, डलवाये और सरकारें बनती चली गई। लेकिन गौरक्षा? कहीं कानून बनाकर कुछ किया गया, किन्तु विदेशी व्यापार बढ़ाने की छूट भी दी गयी। 'गौरक्षक' ठगा गया और उसका आक्रोश प्रतिक्रिया में, प्रत्याक्रमण में बदल गया। कल तक जो पीठ थपथपाते थे उन्हें सत्ता में बैठा देखकर उसके भीतर से कुछ सत्ता का भय कम हुआ और 'गौरक्षक' निर्भय होकर रक्षा के लिए आक्रमण का सूत्र पकड़कर निकलने लगा। जिससे नेता परेशान हो गये, प्रधानमंत्री जी दु:खी हुए और प्रियंका गाँधी जी का भी खून–खौलने लगा। यह सब गौरक्षकों पर हुआ और जिम्मेदार लोगों का ऐसा ही होता है।

लेकिन प्रश्न तब वीभत्स हो जाता है जब आंतक के प्रति, पत्थरबाजों के प्रति, मुस्लिम कट्टरपंथिओं के प्रति, बंगाल में सैकड़ों मनुष्यों पर पाशविक क्रूरतापूर्ण आक्रमण के प्रति यही जिम्मेदार लोग मौन–बस मौन हो जाते हैं, उन आंतकियों को भटका हुआ भ्रमित युवा कहते हुए उनके सुधार की पैरोकारी करते हैं, अवसर देने की बातें बनाते हैं, उपाय करने का प्रयास करते हैं, तो फिर ऐसा ही व्यवहार ऐसी ही उदारता गौरक्षकों के प्रति क्यों नहीं?

आर्यों! आर्याओं सजग, सावधान होकर विवेक पूर्वक विवेचन कीजिये! इस सम्पूर्ण राष्ट्र की सम्पूर्ण श्रेष्ठ परम्पराएं, श्रेष्ठ मान्यताएं आपकी ओर आश्रित हैं। हिन्दु मनोवृत्ति में इनका निदान कभी भी सम्भव नहीं है। सम्पूर्ण निदान के लिए सम्पूर्ण चिकित्सा चाहिए। और यह मात्र आर्य मनोवृत्ति, आर्य संकल्प से ही सम्भव है। एकमात्र आर्य संकल्प।

जीन्द आर्यसद् की बैठक सभाध्यक्ष पं. लोकनाथ जी व आचार्य अशोक पाल जी के नेतृत्व में।

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	9 जुलाई	दिन–रविवार	मास–आषाढ़	ऋतु–वर्षा	नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा
अमावस्या	23 जुलाई	दिन–रविवार	मास–श्रावण	ऋतु–वर्षा	नक्षत्र–पुर्नवसु
पूर्णिमा	7 अगस्त	दिन–सोमवार	मास–श्रावण	ऋतु–वर्षा	नक्षत्र–श्रवण
अमावस्या	21 अगस्त	दिन–सोमवार	मास–भद्रपद	ऋतु–शरद	नक्षत्र–आश्लेषा

महाभारत के युद्ध को प्रमाणित करती आनुवंशिकी

-आचार्य अशोकपाल

वर्तमान में रामायण एवं महाभारत को कथा, कहानी, काल्पनिक उपन्यास बताने का एक प्रचलन सा है। यह प्रचलन ईसाईयों, मुसलमानों के रहनुमाओं ने शुरू किया। आज से 200 वर्ष पूर्व समय पर्यन्त श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि इतिहास पुरुष माने जाते थे। उनको मिथक बताने का यह प्रचलन इतना बढ़ा कि भारत एवं श्रीलंका के मध्य 'रामसेतु' के अस्तित्व को ही नकार दिया गया। जो भी हो यह एक वैचारिक युद्ध है। पर सत्य के प्रमाण विज्ञान समय-समय पर देता रहता है। ऐसा ही विज्ञान है आनुवंशिकी (Genetics)। आनुवांशिकी इतिहास को परत-दर-परत खोल रही है। DNA (डी.एन.ए.) प्रमाण इस सम्बंध में मोहर लगा रहे हैं कि हाँ महाभारत का युद्ध हुआ था। सम्पूर्ण विश्व के DNA (डी.एन.ए.) का उत्तर भारत में मिलना इसका एक और सशवत प्रमाण है।

कईयों को इससे आश्चर्य हो सकता है और बहुतों को झटका भी लगेगा! क्योंकि उनके तो मानो नीचे से जमीन ही खिसक जायेगी। यह एक काल्पनिक विचारधारा ही थी जो श्रीकृष्ण के आस्तित्व पर प्रश्न उठा रही थी। यह एक सोची-समझी औपनिवेशिक षड़यन्त्र था, जो ईसा-मसीह को छोड़ किसी को इतिहास-पुरुष स्वीकार नहीं करना चाहता। ईसा-मसीह से ही जबरन सम्पूर्ण विश्व को काल-गणना करने पर बाधित करता है। पर अब और नहीं। पुरुषों के गुणसूत्र (Y-chromosome) के आधार पर हुई खोज ने महाभारत के युद्ध पर नई रोशनी डाली है।

अभी तक स्त्री-गुण सूत्र की ही उपलब्धता होने के कारण सम्पूर्ण विश्व से आये योद्धाओं के एकत्रीकरण को सिद्ध नहीं किया जा सका था। नये पुरुष गुण सूत्र (Y-DNA) के आंकड़ों से विदेशी योद्धाओं के युद्ध में भाग लेने की पुष्टि होती है।

स्त्री-गुण सुत्र एवं पुरुष गुण सूत्र की उपलब्धता में अन्तर का सामान्य कारण है कि पहले युद्धों में पुरुष ही भाग लेते थे, वर्तमान में भी यही परम्परा है, स्त्रियां तो नाम मात्र को ही सम्मिलित होती हैं। यह सब वर्तमान में इराक, सीरिया, अफगानिस्तान के युद्ध क्षेत्रों में दिखाई पड़ती हैं जहाँ दुनिया भर से मुख्यता मुस्लिम पुरुष भाग लेने पहुंचे हैं। यह भिन्नता स्पष्ट संकेत कर रही है कि पांडवों-कौरवों के मध्य हुये इस विश्वयुद्ध 'महाभारत' में मध्य एशिया, यूरोप, दक्षिण एशिया, अमेरिका से योद्धा पांडवों एवं कौरवों के समर्थन में युद्ध करने आये थे।

तीन मास पूर्व 'BMC Evolutionary Biography' नामक पत्रिका में छपा लेख 'Genetic Chronology for Indian sub Continent Points to Heavily Sex-Biased Dispersals' इस बात को प्रमाणित करता है कि लगभग 5000 वर्ष पूर्व काफी संख्या में पुरुष-गुणसत्र उत्तरी भारत में आया। R1a पुरुष-गुणसुत्र की विद्यमानता महाभारत रूपी विश्वयुद्ध की ओर स्पष्ट संकेत करती है। केवल पुरुष-गुणसूत्र का आना युद्ध की ओर संकेत करता है अन्यथा पलायन पूरा कबीला करता है। अतः यह सिद्ध है कि आर्य बाहर से नहीं आये, अपितु आर्यावर्त्त के चक्रवर्ती साम्राज्य में अविद्या, हठ, दुराग्रह, स्वार्थ के कारण आपसी फूठ पड़ी तो अन्तोगत्वा 'महाभारत' अर्थात् कौरवों एवं पाण्डवों के बीच कुरुक्षेत्र में युद्ध हुआ, जिसमें भाग लेने के लिए संसार भर से योद्धा अपनी सेनाओं सहित आये। युद्ध के बाद अराजकता फैल गई, जिसका जहाँ सामर्थ्य बना कब्जा कर लिया और राजा बन बैठा। महाभारत में तो यहाँ तक वर्णन आता है कि युद्ध के बाद अर्जुन, श्रीकृष्ण के आदेश से यदुवंशी स्त्रियों को द्वारिका से सुरक्षित लाने गये, पर मार्ग में ही उन पर आक्रमण-दर-आक्रमण हुए और वह खाली हाथ लौटे। पुरुष-गुणसूत्र R1a का यूरोप, मध्य एशिया, भारत में पाया जाना निश्चित महाभारत के युद्ध का परिचायक ही नहीं अपितु इस बात का सशक्त प्रमाण है कि उस काल में आर्यों का सम्पूर्ण विश्व पर एकछत्र राज्य था तथा विश्वभर के योद्धा कौरवों-पांडवों के आदेश से ही युद्ध में सम्मिलित होने आये थे।

भविष्य में R1a पुरुष-गुणसूत्र के Z282 एवं Z93 दो अनुभाग हो गये। Z282 जो यूरोप में रहा, महाभारत के युद्ध में सम्मिलित नहीं हुआ तथा Z93 जो केवल मध्य एशिया तक पाया जाता है क्योंकि मध्यएशिया तक युद्ध का प्रभाव रहा तथा यह क्षेत्र उसके बाद से सदा उथल-पुथल का केन्द्र रहा है और यह आर्यावर्त के ही पूर्णतः प्रभाव क्षेत्र में था। पर मुख्यतः Z93 के तीन अनुभाग भारत अर्थात् पाकिस्तान, अफगानिस्तान, हिमालय क्षेत्र में पाये जाते हैं जो यह स्पष्ट संकेत करते हैं कि आर्य भारत के मूल निवासी हैं। विश्व में सर्वप्रथम इस धरा (भूमि) को सर्वोत्म मान उन्होंने ही इसे वसने योग्य बनाया, विश्व की सर्वोत्म सभ्यता की नींव रखी, चक्रवर्ती साम्राज्य किया, सबको सभ्यता-संस्कृति का पाठ पढ़ाया।

वैसे DNA Theory गुणसुत्र विचारधारा की खोज अभी तक मात्र 65000 वर्ष तक के मानवीय इतिहास पर औपचारिक खोज कर पाई है, जबकि मनुष्य जाति का इतिहास 1,96,08,53,117 वर्ष पुराना है। एक अंश मात्र इतिहास से ही DNA खोजशास्त्री काफी उत्साहित हैं। अभी तो उन्हें आर्य विचारधारानुसार सिद्ध करना है कि मनुष्य की उत्पत्ति त्रिविष्ट्प अर्थात् तिब्बत में हूई थी। जैसे-जैसे यह विज्ञान आगे बढ़ेगा मानव इतिहास में आर्य सभ्यता की परतें खुलती जायेंगी एवं विश्व स्वीकार करेगा कि हम सब आर्यों की सन्तान हैं। ईश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ में युवा-युवतियों को धरा के गर्भ से उत्पन्न कर दिव्य सृष्टि बनाई, पुनः मैथुनी सृष्टि का प्रारम्भ हुआ। सृष्टि के प्रारम्भ में ही मानव मात्र को शरीर एवं सृष्टि का संविधान वेद उपहार स्वरूप दिया। ऋषि ब्रह्मा से ऋषि दयानन्द तक वेद के पठन-पाठन की अविरलधारा चली आई है। समय-समय पर पोपजी वेदों के विरुद्ध बिगुल बजा स्वार्थ सिद्धि का प्रयास करते ही रहे हैं, आर्यों ने कभी राम बनकर, कभी कृष्ण बनकर मुंहतोड़ उत्तर दिया है। पर श्रीकृष्ण के काल में पोपजी घर में ही पैदा हो गये, आर्य सभ्यता की चूलें हिल गई और आज धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के पथ पर बढ़ना तो क्या इतिहास ढूढ़ंने में लगे हैं। पर इतिहास जानना भी अनिवार्य है क्योंकि जिनका इतिहास गया उनका भविष्य भी दांव पर समझो! आईये हम सब मिलकर एतिह्य पर कार्य करें!

आर्य निर्मात्री सभा की देन

–आर्य चरणसिंह, जुरहरा, भरतपुर

पूरे विश्व में छोटे-छोटे राष्ट्र हैं। सभी राष्ट्रों की अपनी-अपनी विचारधारा व सभ्यता है। ऐसा ही एक राष्ट्र जिसका नाम आर्यावर्त था। वर्तमान में इसका नाम भारत, हिन्दुस्तान और इण्डिया है। मेरे इस राष्ट्र के प्रान्त राजस्थान के जनपद भरतपुर में बृज और मेवात क्षेत्र में बसा मेरा छोटा सा कस्बा 'जुरहरा' जिसका मैं एक सामान्य नागरिक, मेरा जन्म आर्य समाजी परिवार में हुआ। जिसकी नींव मेरे दादाजी ने रखी। मेरे पिताजी दुग्ध (डेयरी) में ट्रक ड्राइवर और माताजी एक कुशल ग्रहणी रही हैं। जो कि प्रारम्भ से ही धार्मिक प्रवृति की महिला रही हैं और मैं वर्तमान में सरकारी अध्यापक पद पर कार्यरत हूँ। मेरे जीवन की वैचारिक यात्रा के स्मरणीय पल निम्न प्रकार रहे हैं-

बचपन से ही धार्मिक प्रवृति और सत्य को जानने की जिज्ञासा-मेरी माताजी प्रारम्भ से ही वैदिक और पौराणिक दोनों विचारधाराओं से मिश्रित थी। पिताजी नौकरी में ही व्यस्त रहते, जिसके कारण माताजी का प्रभाव मुझ पर अधिक रहा। वो जैसा करती, मैं भी वैसा ही करता। मैं प्रति रविवार आर्यसमाज भवन में जाता रहा जिसके कारण हवन व संध्या करना सीख गया। माताजी आर्यसमाज से आने के बाद घर में बने छोटे से मन्दिर में पूजा करती थी। मैं उनका अनुकरण करता था। प्रतिदिन हनुमान चालीसा पढ़ता था और संध्या भी करता था। शिवरात्रि और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत भी करता था। कभी-कभी गोवर्धन की परिक्रमा के लिए भी जाता था।

आर्यसमाज जुरहरा द्वारा आयोजित वार्षिक उत्सव में जाकर उपदेश आदि सुनता था। धीरे-धीरे वैदिक सिद्धान्तों को जानने लगा, लेकिन हवन-संध्या, हनुमान चालीसा व व्रत आदि जारी रहे। परन्तु मन में सत्य और असत्य को जानने की जिज्ञासा बनी रहती थी।

अचानक एक दिन घर पर सोच-विचार करते हुए मेरा ध्यान एक पुस्तक पर पड़ा जिसका नाम 'दो बहनों की बातें' (सत्य प्रकाशन, मथुरा) था। वो मैंने पढ़ी और सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय भी बीच-बीच में से थोड़ा-थोड़ा किया। अब पहले से ज्यादा वैदिक सिद्धिन्तों के प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ी, इसके उपरान्त मैंने मूर्तिपूजा, हनुमान चालीसा व व्रत आदि पाखण्ड छोड़ दिये। इसके पश्चात् मैंने अपनी माताजी को पाखण्ड के बारे में समझाया और धीरे-धीरे उन्होंने भी पाखण्ड छोड़ दिये एवं घर में बने मन्दिर में से तस्वीरों को हटा दिया। अब हम सब परिवार वाले वैदिक सिद्धान्तों की ओर बढ़ने लगे लेकिन जितना जानते थे उतना ही बढ़े।

मन की व्यथा- स्पष्ट रूप से कहा जाये तो हम आर्य समाजी होते हुए भी वैदिक सिद्धान्तों को कम ही जानते थे, जिसका मुख्य दोषी मैं आर्यसमाज और आर्य प्रतिनिधि सभाओं को मानता हूँ। जिनके द्वारा वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार- प्रसार पूर्ण योजना के साथ ठीक-ठीक नहीं किया गया। केवल हवन-संध्या और वार्षिक उत्सव तक सीमित रह गये। जिसके कारण अधिकांश आर्यसमाजियों की संतान मुख्य आर्य सिद्धान्तों से वंचित रह गयी और आर्यसमाज का कार्य 'कूप मंडूक' की भांति रह गया। अर्थात् अपने तक ही सीमित रह गये, नये आर्यों का निर्माण नहीं हुआ और आर्यों की संख्या बढ़ने के स्थान पर घट गयी और केवल आर्यसमाज में बुजुर्ग रह गये एवं युवाओं की संख्या नाम मात्र की रह गयी। अब मैं चिंतित था कि आर्य समाज का कार्य आगे कैसे बढ़े!

आर्यसमाजी समझने के कारण बाबा रामदेव के प्रति झुकाव- धीरे-धीरे पता चला कि एक व्यक्ति आर्य समाज के गुरुकुल में पढ़ा और अपने तरीके से आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ा रहा है, जिसका नाम 'बाबा रामदेव' था। मैं बहुत खुश हुआ कि मुझे अब आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने का मार्ग मिल गया। मैं बाबा रामदेव का भक्त बन गया, इस भावना के साथ कि वह आर्यसमाजी है और मैं अपनी पूरी ऊर्जा के साथ बाबा रामदेव के पथ को आगे बढ़ाने में लग गया।

सत्र के माध्यम से जीनव को नई दिशा- अचानक एक दिन मुझे आर्य समाज के प्रधान पंडित मंगलदेव आर्य (जो मेवात में निर्मात्री सभा का सत्र करके आये थे) ने बताया कि एक राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा है, जो दो दिन का सत्र लगाती है और बताया कि इस सत्र में तर्क और प्रमाणों के माध्यम से प्रश्नोत्तर शैली में वैदिक सिद्धान्तों से अवगत कराया जाता है। उनका यह सत्र रोचक और प्रशंसनीय है। वर्तमान में आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाने का एकमात्र विकल्प। और उन्होंने कहा कि हमें भी जुरहरा में दो दिन का सत्र लगवाना है तथा मैं बुजुर्ग हूँ इसलिए आपको सत्र के लिए संख्या एकत्रित करनी है। मैंने कहा आप चिंता न करें और सत्र की तैयारी करें। मैं संख्या लाने के लिए पूरा प्रयास करूंगा।

माह जून 2009 में सत्र लगा। उसमें संख्या लगभग 70 की रही। सत्र के प्रारम्भ से सत्र के समापन तक प्रत्येक सिद्धान्त वैज्ञानिक तरीके से उपस्थित सत्रार्थियों ने आत्मसात किये।

सत्र में प्रत्येक सिद्धान्तों को जानने के बाद यह सत्र अनुभव हुआ कि मैं सोभाग्यशाली हूँ कि मेरा जन्म आर्य समाजी परिवार में हुआ, लेकिन दुर्भाग्यशाली हूँ कि इन आर्य सिद्धान्तों को न जानने के कारण मेरे जीवन का काफी समय व्यर्थ चला गया। मेरी आत्मा जिन सिद्धान्तों को जानने के लिय प्यासी थी वो पूर्ति मेरी इस दो दिन के सत्र में हुई और मेरी आर्य सिंद्धान्तों के प्रति दृढ़ता बढ़ गई। इस कार्य के लिए में राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा का ऋणी रहूँगा जिसने आर्य सिद्धान्तों को सरलता से तर्क और प्रमाणों से अवगत कराया। और मुझे अनुभव कराया कि हम आर्यों की सन्तान हैं और आर्य बनना-बनाना है। राष्ट्र को पुनः आर्यावर्त बनाना है। वेद, ईश्वर का संविधान है। धर्म एक है, अनेक नहीं। ईश्वर एक है जो कि निराकार, सर्वव्यापक, चेतन सत्ता है। वेद ही हमारा धर्म ग्रन्थ है। वर्तमान में ईश्वर की आज्ञा के उल्लघंन से बचने के लिए ऋषि दयानन्द कृत **'सत्यार्थप्रकाश'** हमारा मार्ग दर्शक ग्रन्थ है। राष्ट्र के पुनः निर्माण के लिए प्रत्येक व्यक्ति को आर्य बनाना है अर्थात् आर्य से आर्य परिवार, आर्यपरिवार से आर्य समाज और आर्य समाज से आर्य राष्ट्र (आर्यावर्त)।

निर्णय करने में संशय की स्थिति- राष्ट्रीय आर्य निमात्री सभा के दो दिन के लघु गुरुकुल में सत्य सिद्धान्तों को जानने के बाद भी मैं यह निर्णय नहीं कर पा रहा था कि 'मैं राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के साथ मिलकर आर्य निर्माण - राष्ट्र निर्माण का कार्य करूँ या बाबा रामदेव के साथ मिलकार कार्य करूँ?' क्योंकि मैं बाबा रामदेव को अब भी आर्यसमाजी मानता था जिसके कारण मेरी स्थिति 'किंकर्तव्यविमूढ़' जैसी हो गई और मैंने निर्णय लिया कि मैं दोनों के साथ कार्य करूँगा।

जीवन के उद्देश्य से युक्त आर्यमार्ग की प्राप्ति- सत्र करने के 1 वर्ष बाद अचानक वह दिन आया जिसने मेरे जीवन की दिशा ही बदल दी और वह दिन था हिसार (हरियाणा) में माह जून 2010 में आयोजित 5 दिवसीय राष्ट्रीय सत्र। जिसको करने के बाद मैंने एक स्पष्ट निर्णय लिया कि मैं व्यक्तिवादी नहीं आर्यसिद्धान्तवादी हूँ और मेरी सबसे बड़ी भ्रान्ति दूर हुई एवं स्पष्ट हुआ कि मैं

शेष अगले पृष्ठ पर

पिछले पृष्ठ का शेष

सिद्धान्तों के साथ चलूंगा और मैंने अनुभव किया कि वर्तमान में राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा बताए सिद्धान्तों से ही इस राष्ट्र को बचाया जा सकता है। तथा मैंने उस दिन से संकल्प लिया कि इस सभा के निर्देशन में आर्य समाज और राष्ट्र का कार्य करूंगा, अन्य संगठनों के साथ नहीं जिससे मेरे द्वारा किया गया पुरुषार्थ सार्थक हो और मेरी ऊर्जा सही मार्ग पर लगे एवं जीवन के उद्देश्य की पूर्ति हो।

इसके बाद मैं अकेला चल पड़ा आर्य सिद्धान्त रूपी औषधि को साथ लेकर आर्य निर्माण-राष्ट्र निर्माण के महान कार्य की ओर। अब तक 8 पुरुष और 2 महिलाओं के मिलाकर 10 सत्र भरतपुर जनपद में लग चुकें हैं। जिससे भरतपुर जनपद और बृज व मेवात क्षेत्र में आर्य विद्या का प्रचार-प्रसार हुआ है। इस कार्य के कारण हजारों युवाओं ने आर्य सिद्धान्तों को जाना और जो आर्य समाज के विरोधी थे अब वो भी समर्थक हैं, यह है दो दिन के लघुगुरुकुल का जादू।

विशेष अनुरोध- मैं आर्य चरणसिंह 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' पत्रिका के माध्यम से आर्यों/आर्याओं की संतानों से कहना चाहूँगा कि यदि आप राष्ट्र को पुनः आर्यराष्ट्र देखना चाहते हो, युवाओं को अश्लीलता व नशे से बचाना चाहते हो, राष्ट्र को पुनः विश्वगुरु देखना चाहते हो, स्वाभिमान से जीना चाहते हो, सच्चा आस्तिक और सच्चा राष्ट्र भक्त बनना चाहते हो, प्राणीमात्र का हित करना चाहते हो, जीवन के उद्देश्य की पूर्ति करना चाहते हो, व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण की ओर बढ़ना चाहते हो...इत्यादि तो राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिन के लघु गुरुकुल में सत्य सिद्धान्तों को जानने व जनाने के लिए राष्ट्र निर्माण रूपी यज्ञ में अपनी आहुति प्रदान करें।

वर्तमान में इस धर्म निरपेक्ष राष्ट्र के अधिकांश व्यक्ति राष्ट्र की चिन्ता तो करते हैं लेकिन यह नहीं जानते कि राष्ट्र का निर्माण कैसे होता है? राष्ट्र का आधार क्या है? आज धर्म और राष्ट्र के नाम पर तथाकथित संगठन, राजनैतिक पार्टियां व तथाकथित धर्म गुरु हम सभी को ठग रहे हैं। यहाँ तक कि आज व्यक्ति यह निर्णय नहीं कर पा रहा है कि संगठन होता क्या है? किस संगठन का साथ दें? आज अधिकांश ऐसे संगठन है जिनकी विचारधारा केवल 'कहीं की ईट कहीं का रोड़ा भानुमति ने कुनवा जोड़ा' जैसी है। अर्थात् सिद्धान्त भिन्न-भिन्न फिर भी संगठन, लेकिन यर्थात् में देखें तो संगठन नहीं भीड़तंत्र है। भीड़ केवल स्वार्थी होती है, निस्वार्थी नहीं। यदि संगठन का निर्माण चाहते हो तो वेद के सिद्धान्त **'संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्...'** पर चलना होगा अर्थात् हमारी विचारधारा एक हो वो भी वैदिक जिसके लिए ऋषि दयानन्द भी कहते हैं कि **'जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ नहीं लगेगा'** इस उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए वर्तमान में राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा संघर्ष के साथ दृढ़ प्रयासरत है। परन्तु जिन आर्य समाजियों को इस कार्य को आगे बढ़ाना था, वो ही (अधिकांश) ऋषि दयानन्द द्वारा बताये गये आर्यसमाज के उद्देश्यानुसार कार्य नहीं कर रहे हैं, अपितु तथाकथित संगठनों में अपनी ऊर्जा लगाकर आर्य समाज को हानि कर रहे हैं। अर्थात् वेद की आज्ञाओं का उल्लघंन कर रहे हैं। इन्होंने व्यक्ति विशेष को आगे बढ़ाया लेकिन आर्य समाज को नहीं। इनके आलस्य-प्रमाद, आपसी फूट और आपसी झगड़ों के कारण स्थिति यहाँ तक बिगड़ गई कि न तो आर्यों की संख्या बढ़ा पाये और न ही आर्य सिद्धान्तों को बचा पाये।

आओ! वेद की आज्ञानुसार ऋषि दयानन्द के सपने को पूरा करने के लिए हम सब सच्चे आर्य **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** के कार्य को तीव्रगति से आगे बढ़ायें, चाहे कोई हमें पागल ही क्यों न कहे और चाहे हमें दुनियां वालों से कहना ही पड़े कि-

इन्हीं बिगड़े दिमागों में, घने खुशियों के लच्छे हैं।
हमें पागल ही रहने दो, हम पागल ही अच्छे हैं।।

अन्त में कहना चाहूँगा कि सभी आर्य संगठित होकर राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के निर्देशन में आर्य निर्माण का कार्य करें और राष्ट्र को पुनः ऋषि-मुनियों, श्रीराम-श्रीकृष्ण आदि का आर्य राष्ट्र बनाएं। और निम्न पक्तियों के माध्यम ये अपने पुरुषार्थ को सार्थक करें एवं स्वयं को ऊर्जावान बनाये रखें।

तुम चाहोगे तो आसमान, जमीन पर आएगा।
तुम चाहोगे तो धरा का हर कोना स्वर्ग बन जायेगा।।
कौन कहता है कि भाग्य के किस्से बदल नहीं सकते।
तुम चाहोगे तो वर्तमान ही नहीं, भविष्य भी बदल जायेगा।।
तुम चाहोगे तो राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति आर्य बन जायेगा।
आज नहीं तो कल यह राष्ट्र पुनः आर्यावर्त बन जायेगा।।

नशे की ओर जाती युवा पीढ़ी

-आर्य कुलदीप, नगूरा, जीन्द

कुछ इस तरह के ज्वलन्त प्रश्न हैं जिनको लेकर समाज की रीढ़ की हड्डी कही जाने वाली युवा पीढ़ी संशय में नजर आती है। जहाँ देखो सभी युवा साथियों में, छात्र-छात्राओं में विचार चर्चा के मुद्दों में ये कुछ ऐसे विषय समाहित रहते ही हैं। जिनके उचित मार्गदर्शन के अभाव में वातावरण के प्रभाव से स्वयं को बचा पाना बहुत कठिन प्रतीत हो रहा है, इनमें ऐसे अनेक प्रकार के विषय हैं, जैसे- शराब व नशीली दवाओं का सेवन तो आजकल की युवा पीढ़ी की एक दिनचर्या ही बन गया हो। युवक जिस प्रकार के वातावरण (फ्रेन्ड सर्कल) में रहेगा वैसे ही गुण या अवगुण युवक में आ जाते हैं। अब ऐसी ही स्थिति हमारे कॉलेज, यूनिवर्सिटी, होस्टल आदि में मिलती है तो स्वतः ही युवा इन नशों में फंस जाता हैं। दूसरा माँसाहार भी आज की युवा पीढ़ी की दिनचर्या में शामिल हो चुका है जिसके पीछे उनके द्वारा तर्क विज्ञान से ही दिये जाते हैं जोकि गलत और आधे अधूरे तर्क होते हैं।

आज का युवा उपभोक्तावादी संस्कृति से आकर्षित होकर अनेक प्रकार के व्यसनों का शिकार हो रहा हैं, अधिकांश युवक-युवतियों के पास वही अधूरे तर्क होते हैं जिनकों वे सही मान कर शराब, धूम्रपान और नशीली दवाओं का सेवन करते हैं।

हम जिस प्रकार के मित्रों की संगत करते हैं वैसे ही संस्कार हममें प्रवेश करते हैं, मित्रता एक बहुआयामी शब्द है, इसके दो व्यापक फलक है- पहला सकारात्मक फलक वह है जहाँ कोई मित्र अपने मित्र को सन्मार्ग पर ले जाता है और अच्छे-बुरे समय में उसका सहयोग करता है, ऐसे मित्रों पर गर्व किया जा सकता है उनके अच्छे कृत्यों का अनुकरण किया जाना असंगत नहीं होता।

दूसरा नकारात्मक फलक जान पहचान को मित्रता का नाम देने में निहित है दुर्व्यसनी लोग अपने साथियों को अपने जैसा ही बना लेने के लिए ही मित्रता, साथ देने, सम्बन्धों को बनाये रखने जैसे तर्क के द्वारा शराब, धूम्रपान और मांसाहार करने के लिए प्रेरित करते हैं, यदि कोई इसका विरोध करता है तो पुरातनपंथी, पिछड़ा, डरपोक, माँ बाप का गुलाम आदि संज्ञा दे दी जाती है और उसका मनोबल नष्ट किया जाता है। ऐसे मित्रों से बचकर रहना ही इस का उपाय है।

शराब पीने में क्या बुराई है? इसका आकलन इससे कर सकते हैं कि शराब के नशे में सदैव डूबे रहने वाले लोग भी अपने बच्चों को शराब न पीने की सलाह देते मिलेंगे। दोस्तो आज समाज में युवाओं में समस्या यह है कि अनेक प्रकार के व्यसन हैं और जिनको सुधारना ही सभी आर्यों का कार्य है।

आप सभी से यही निवेदन व आकांक्षा है कि अपने इष्ट मित्रों, भाई बंधुओं सहित राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित हो रहे सत्र में आएं और अपने जीवन से दुर्व्यसन समाप्त कर, श्रेष्ठ सिद्धान्तों को धारण कर न केवल अपने जीनव को सफल बनाएं अपितु अन्यों को भी सहयोग करने के योग्य बनें।

हाँ! मैं ही हूँ ईश्वर का पुत्र

–आर्य कपिल वैदिक

हाँ! मैं ही हूँ ईश्वर का पुत्र,
हां! मैं हूँ आर्य।
मैंने माना ईश्वर आज्ञा का स्वधर्म
मैंने जाना ऋषियों–मुनियों का मर्म
हाँ! मैं ही हू ईश्वर का पुत्र,
हां! मैं हूँ आर्य।

मैं मानता हूँ स्वयं को जीवात्मा
मैं मानता हूँ एक ही सवर्ज्ञ निराकार परमात्मा
हाँ! मैं ही हूँ ईश्वर का पुत्र,
हां! मैं हूँ आर्य।

मैं भोग रहा हूँ अपने प्रिय पिता का विछोह
चाहता हूँ फिर मिलूं त्यागकर काम,क्रोध,लोभ,मोह
हाँ! मैं ही हूँ ईश्वर का पुत्र,
हां! मैं हूँ आर्य।

कटे मेरा जीवन ईश्वर की आज्ञार्थ
करता रहूँ अंत तक अपना परम पुरुषार्थ
हाँ! मैं ही हूँ ईश्वर का पुत्र,
हां! मैं हूँ आर्य।

कामना है मेरी यही कि बढ़ते रहें आर्य
'वैदिक' कहे तुम डटे रहो, वेदानुकुल हो कार्य
हाँ! मैं ही हूँ ईश्वर का पुत्र,
हां! मैं हूँ आर्य।

10 जुलाई–07 अगस्त 2017 **श्रावण** ऋतु– वर्षा

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती
कृष्ण प्रतिपदा	कृष्ण द्वितीया	कृष्ण तृतीया	कृष्ण चतुर्थी	कृष्ण पंचमी	कृष्ण षष्ठी	कृष्ण सप्तमी
10 जुलाई	11 जुलाई	12 जुलाई	13 जुलाई	14 जुलाई	15 जुलाई	16 जुलाई
अश्विनी	भरणी	कृतिका	राहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
कृष्ण अष्टमी	कृष्ण नवमी	कृष्ण दशमी/एकादशी	कृष्ण द्वादशी	कृष्ण त्रयोदशी	कृष्ण चतुर्दशी	कृष्ण अमावस्या
17 जुलाई	18 जुलाई	19 जुलाई	20 जुलाई	21 जुलाई	22 जुलाई	23 जुलाई
पुष्य	आश्लेषा/मघा	पू० फाल्गुनी	उ० फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	चित्रा
शुक्ल प्रतिपदा	शुक्ल द्वितीया	शुक्ल तृतीया	शुक्ल चतुर्थी	शुक्ल पंचमी	शुक्ल षष्ठी	शुक्ल सप्तमी
24 जुलाई	25 जुलाई	26 जुलाई	27 जुलाई	28 जुलाई	29 जुलाई	30 जुलाई
स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
शुक्ल अष्टमी	शुक्ल नवमी	शुक्ल दशमी	शुक्ल एकादशी	शुक्ल द्वादशी	शुक्ल त्रयोदशी	शुक्ल चतुर्दशी
31 जुलाई	1 अगस्त	2 अगस्त	3 अगस्त	4 अगस्त	5 अगस्त	6 अगस्त

श्रवण शुक्ल पूर्णिमा 7 अगस्त

उपाकर्म पर्व

Rishi Dayanand - His Life And Work -Saroj A rya, Delhi

The father's wrath was terrible. Taking hold of his clothes, he savagely tore them to pieces. With great anger he reproached him for having brought eternal disgrace to their family. Finding his father in a fit of anger Shuddha Chaitanya fell at his feet and with folded hands begged his forgiveness. He said, he was already feeling sorry at what he had done and would be only too pleased to retreat his steps and accompany his father who took him to the place where he was staying and ordered his sepoys to keep a strict watch over his movements.

Our youthful hero was determined and had not changed his mind. It was fright that had made him assume the appearance of an apologetic. Inwardly the young aspirant after yoga-vidya was as firm as ever and was on the lookout for an opportunity to regain his freedom. Night came on, and Shuddha Chaitanya found himself watched by the sepoys who stood between him and his ideal. The sepoys who were on duty had fallen asleep. "Here's an opportunity Now or never" he muttered to himself, left his bed and crept stealthily out of home. He had covered about half a mile when he came across a temple with a lofty pipal tree growing near it. Anxious to elude the search which he knew, would certainly be made for him soon after, he climbed up and hide himself in the thickly covered branches.

The morning, found the sentinels without their ward and they started their search again. Shuddha Chaitanya had not been long in his novel retreat, when the dreaded sentinels arrived and began to look into every nook and corner of the temple. He held his breath in silence lest any movement on his part should give them clue. It was with a sigh of relief, that he saw them retreating after a vigorous but fruitless search. The whole day he did not leave his hiding place, for fear of being captured. He had nothing to eat, but only some water contained in a lota (a small metal pot) which he carried with him.

As soon as night set in, he quietly slipped down the tree and resumed his journey, halted at a place some four miles from the temple. Early in the morning he started up afresh. After spending some time in Ahmadabad and Baroda, he took himself to Narmada where he hoped to meet some Yogis. Here he read several works on Vedanta under a Sanyasi Paramahansa Paramannnd.

As a Brahmachari, Shuddha Chaitanya had to cook his food himself, and this greatly interfered with his studies. He was, therefore, anxious to enter the Sanyasa-asharama. This would help him in another way too; it would minimize the chances of his being found by the members of his family as nobody dared to ask original place of a Sanyasi. Accordingly he approached a Sanyasi named Chidashrama to give him the Sanyasa. His request was refused on the ground of his being too young for the Sanyas.

This did not dismay our young Brahmachari who continued his studies with unflagging zeal on the bank of the river Narmada, waiting for a more favourable opportunity. At last one day he met a Dandi Swami and a Brahmachari both of them had halted in a forest near by en route to Dwarika. Shuddha Chaitanya at first opened his heart to the Brahmchari and asked him to intercede for him to Swami Purnanand (this was the Sanyasi's name), so that he might be pleased to initiate him into Sanyas-asharma. After some hesitation Swami Purananand agreed to give him Sanyas and the staff of his order, naming him Swami Dayanand Saraswati. Dayanand stayed and studied with his guru for some time and again started in quest of a true yogi.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

इस सत्र (शिविर) में आने से मुझे धर्म के प्रति और ज्यादा ज्ञान प्राप्त हुआ जिससे कि मैं अनभिज्ञ था। अपने हिन्दु धर्म से दूर जा रहा था लेकिन अब बिल्कुल नहीं जांऊगा। मुझे बहुत अच्छा लगा, मेरा नाम आज से कपिल आर्य है। मैं खुश हूँ सभी हिन्दुओं को धर्म से जोड़ूंगा और खुद भी जुड़ा रहूँगा और धर्म के प्रति सभी नियमों का ध्यान पूर्वक पालन करुँगा। आज से मैं कट्टर हिन्दु हूँ। जय आर्य-जय आर्यावर्त

नाम : कपिल कुमार, **आयु :** 23 वर्ष, **योग्यता:** बी.ए., **पता:** ग्राम-पो. टंढ़ेडा, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

इस सत्र के अनुसार मुझे बहुत प्रेरणा मिली है, क्योंकि इस सत्र से मुझे किसी भी प्रकार के सही गलत के बारे में मुझे पता चला है। जिससे में अपने जीवन को सही दिशा में ले जा रहा सकूँ और मैं किसी भी गलत कार्य को न करूँ और जो मैंने यहाँ पर अच्छी-अच्छी बातों को ग्रहण किया है उन्हें दूसरों का बताने का पूर्ण रूप से प्रयास करूँगा और सभी को ठीक दिशा में ले जाने का प्रयास करूँगा।

मैं पूर्ण रूप से आर्य निर्मात्री सभा के प्रति पूर्ण रूप से लोगों को इसके बारे में बताऊंगा और उसे ठीक दिशा में ले जाने का हर सम्भव प्रयास करुँगा।

नाम : विक्रान्त कुमार, **आयु :** 21 वर्ष, **योग्यता :** एम. ए., **पता :** अहैरा, टटीरी, (बागपत) उत्तर प्रदेश

मैंने पहली बार सत्र में भाग लिया! सत्र की कार्य पद्धति मुझे बहुत अच्छी लगी। सत्रार्थियों के लिए भोजन का प्रबन्ध कुशलता पूर्वक किया गया है। आर्यसमाज एक वैचारिक आन्दोलन है। इस बात को सत्र में पूर्ण रूप से क्रियान्वित किया जा रहा है, इससे मैं बड़ा प्रभावित हुआ हूँ। सत्र में जो नये सत्रार्थियों से जो प्रश्नोत्तर का कार्य है जिससे उनकी योग्यता व विचारधारा का बोध होता है, तथा उनमें सत्य सिद्धान्तों के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होती है, इसके लिए सभी उपदेशक धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के इस कार्य व आर्य निर्माण के महान कार्य में तन-मन-धन से अपना पूर्ण सहयोग करूँगा तथा लोगों से व्यक्तिगत रूप से मिलकर आर्य बनाऊंगा। इसके लिए परिस्थिति के हिसाब से जो भी उचित होगा वो सब करूँगा।

नाम : अंकुशार्य मलिक, **आयु:** 22 वर्ष, **योग्यता :** स्नातक, **पता :** ग्राम-पो. लाक पट्टी मोघा (शामली), उत्तर प्रदेश

आर्य प्रचारक कक्षा करनाल में आचार्य धर्मपाल जी व प्रचारकगण

छपरौली बिनौली
amarujala.com
नशाखोरी से दूर रहें युवा
वैदिक कन्या इंटर कॉलेज में आयोजित आर्य निर्माण शिविर में किया आह्वान
कपट जाल से बचकर सनातन सिद्धांतों को अपनाने पर जोर
आर्य प्रशिक्षण महासत्र में प्रवचन करते आचार्य।

जो मैं निरानिरी संसार ही का भय करता, और सर्वज्ञ परमात्मा का कुछ भी नहीं, कि जिसके आधीन मनुष्य के जीवन-मृत्यु और सुख-दु:ख हैं, तो मैं भी ऐसे ही अनर्थक वाद विवादों में मन देता। परन्तु क्या करूं, मैं तो अपना तन, मन, धन सब सत्य के ही प्रकाशार्थ समर्पण कर चुका। मुझ से खुशामद करके अब स्वार्थ का व्यवहार नहीं चल सकता, किन्तु संसार को लाभ पहुँचाना ही मुझ को चक्रवर्ती राज्य के तुल्य है।

-ऋषि दयानन्द, (भूमिका-भ्रान्ति निवारण)

संध्या काल

श्रावण मास, वर्षा ऋतु, कलि-5118, वि. 2074	भाद्रपद मास, शरद ऋतु, कलि-5118, वि. 2074
(10 जुलाई 2017 से 07 अगस्त 2017)	(8 अगस्त 2017 से 06 सितम्बर 2017)
प्रात: काल: 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)	प्रात: काल: 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 A.M.)
सांय काल: 7 बजकर 15 मिनट से (7.15 P.M.)	सांय काल: 6 बजकर 45 मिनट से (6.45 P.M.)

नरवाना (जीन्द) व टटीरी (बागपत) में आयोजित महासत्रों के दृश्य

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।